प्रश्न-पेपर ५६ ता. २४-६-८८

'हैम सं. प्र. म.' पाठ ३५-३६ तथा परिशीष्ट मार्क्स ५०

प्र. १ नीचेना रूपोनो विग्रह करी अर्थ लखो। गमे ते ४ ४ मार्क्स

(१) पर्यायिदृक्षिष्यत् (२) आधीजिगमिष्या: (३) आजिघृक्षिष्व

(४) ऐर्त्स: (५) प्रोर्णुनूष (६) नीरम्भयेत्

(७) अध्यापयिषीषम् (८) अजूहवत (९) आयियवाव

प्र. २ नीचेना प्रश्नोना जवाब लखो। १० मार्क्स

(१) पाठ ३५ नि. ३ना अपवाद समजावी पा. ३५ नि. १२ शा माटे ते समजावो।

(२) सन् ने कितवत् करवाथी थतां फायदा बहारना दाखला पूर्वक लखो।

(३) अकर्मक, आहारार्थ तथा पांच प्रकार सिवायना धातुओनी कर्मणि वाक्य रचना
बहारना दृष्टांत थी समजावो

(४) प्रेरकनी निशानी क्यां रहेती नथी ते दृष्टांत पूर्वक समजावी पा. ३६ नि ११-६ शा माटे ?

प्र. ३ नीचेना रूपोनी साधनिका करी अर्थ लखो। गमे ते - ३ ४ मार्क्स

(१) अपाप्य: (२) ईत्सर्यताम् (३) व्यांटिटिषिष्ट (४) अरूरुपन्

प्र. ४ (अ) नीचेना धातुओना माग्या प्रमाणे कर्तरि रूपो लखो। गमेते ४ १२ मार्क्स

(१) परि + अर्ह् - सन्नन्त, वि., अद्य., आशी. १ पु.

(२) निस् + भ्रस्ज् " आज्ञा क्रिया. २ पु.

(३) दुस् + क्लृप् " परोक्ष, वर्त. एकव. बव.

(४) उद् + लभ् णिगन्त आज्ञा. सामा. अद्य. आ. पदी २ पु.

(५) निस् + ध्यै " वि., श्व. अद्य. आशी. प. पद १ पु.

प्र. ५ नीचेना वाक्योनुं ससंधि संस्कृत करो।

(१) ग्रहण करवा माटे इच्छाता गुणो गुरूवडे प्राप्तकरावरावीने शिष्य मोक्षमां मोकलावायो

(२) शिष्यने पूछवानुं इच्छीने गुरूजीए मनमां निर्णय कर्यो के हवे कोई
पण प्रकारे हुं मारा शिष्यने मुंझावुं।

(३) भणवा माटे इच्छाता विषयों खरेखर कल्याणकारी हता पण अमारा भाग्ये
अमने ज्ञानप्राप्तिमां निमित्तथी वियोगी कर्या।

(४) संसारनो त्याग करनार, वैराग्यने वधारनार, ज्ञान-ध्यानमां रहेनार ( अधि+आस्)
गुरू परतंत्रपणाने इच्छनार अने तप वि. द्वारा स्वकर्मनो नाश करनार जीवने धर्म
जल्दीथी मोक्षमां मोकले छे। ( सन्नन्त नाम वापरवा)

जवाब - प्र. १ (१) न थाय (आ. पदी छे) (२) अध्येतुं इष्या:

प्र. ३ (१) न थाय (कर्मणि मां आ. पदना प्र. लागे) (२) न थाय (मूर्धन्यन थाय) (४) रूप् - प्रेरक अद्य. ३ पु. ब. व.

(1) जिघृक्षयमाणान् मुणान् प्राप्य गुरुणा शिष्यः मुक्तिम् * गमितः।

(2) शिष्यं पिपृच्छित्वा गुरुः मनसि निश्चिकाय अथ येन केन प्रकारेण अहं मम शिष्यं मोहयेयम्।

(3) पिपठिष्यमाणाः विषयाः हि श्रेयस्कराः अपि न